UP Board Notes Class 6 Hindi Chapter 15 खग, उड़ते रहना (मंजरी)

खग उड़ते रहना ..... जीवन भर!

संदर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'मंजरी' के 'खग, उड़ते रहना' पाठ से ली गई हैं। इसके रचयिता सुप्रसिद्ध कवि-गीतकार गोपालदास नीरज जी है।

प्रसंग – कवि मानव को पक्षी के बहाने सदा क्रियाशील रहने का संदेश देता है।

व्याख्या – कवि कहता है कि ओ पक्षी! तू जीवनभर उड़ता रहा। वैसे, तू अपना रास्ता भटक चुका है और तेरे पंखों में भी अब पहले जैसी गति नहीं रही; फिर भी पीछे मत लौटना; क्योंकि वह मौत से भी बदतर है।

मत डर ..... जीवन भर!

संदर्भ और प्रसंग – पूर्ववत् ।

व्याख्या – तू रास्ते की बाधाओं से मत डर; नई आशा, नए विश्वास की लहर पाले बढ़ता रह; तेरे सभी शत्रु (सारी समस्याएँ) तेरे पंखों की फड़फड़ाहट से पिसकर मिट जाएँगे अर्थातू तेरे उड़ते रहने मात्र से सारी समस्याएँ दूर हो जाएँगी।

यदि तू ..... जीवन भर!

व्याख्या – यदि तू जीवन पथ की बाधाओं से डरकर लौट पड़ेगा, तो तेरे चाहने वाले ही तेरा मजाक उड़ाएँगे!

और मिट गया ..... जीवन भर!

संदर्भ और प्रसंग – पूर्ववत् ।

व्याख्या – यदि तू क्रियाशील रहते, लक्ष्य प्राप्त करते हुए मिट गया, तो पूरी दुनिया तेरी खाक श्रद्धापूर्वक सिर-माथे चढ़ाएगी और तू प्रेरणा-स्तम्भ बन जाएगा।

https://www.evidyarthi.in/